जुलाई : 2022

ISSN 2278 - 6880
Approved by UGC

संग्रथन

हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरुवनन्तपुरम

Dr Sheela T Nair

Head of the De...
N.S.S. College, ...

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE

Scanned with CamScanner

संग्रथन का संरक्षक मण्डल

आचार्य राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा, 'हिन्दी-विश्व गौरव-ग्रन्थ' शृंखला के प्रणेता एवं प्रकाशक, ग्वालियर (म.प्र.), मो:९४२५११००५७
प्रो.(से.नि.).डॉ.टी.जी.प्रभाशंकर'प्रेमी',विश्वविख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं शिक्षाविद्,बंगलूर,मो:९८८०५-८१२१८
श्री विमलकुमार बजाज,प्रखर समाजसेवी,व्यवसायी एवं अध्यक्ष, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी,शिलाँग,मेघालय,मो:९४३६१-१२८११
श्री योगेन्द्र कुमार, नोइडा (उ.प्र) डॉ.उमाकुमारी.जे.

सम्पादक मण्डल

प्रोफ.हिल्डा जोसफ
डॉ.एम.एस.राधाकृष्ण पिल्लै
डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी
डॉ.श्रीलता.के
डॉ. सुमा.एस
प्रोफ.ए.मीरा साहिब
श्री.के.जनार्दनन नायर
प्रोफ.एन.सत्यवती
डॉ. सुनिलकुमार.एस
डॉ.सोफिया राजन

इस अंक में....

संपादकीय : स्वतंत्र भारत की पंद्रहवीं राष्ट्रपति आदिवासी महिला द्रौपदी मुर्मु	डॉ.वी.वी.विश्वम्	5-6
मन की बात (जून २०२२)	श्री नरेन्द्र मोदी	7-13
कर्किडकम महीने की विशेषताएँ	प्रोफ.उषा.वी.नायर	14-16
भाषा के विविध रूपों की प्रयुक्ति (गतांक से आगे)	प्रो.(डॉ).आर.जयचन्द्रन	17-21
'जीवन संध्या' उपन्यास में वृद्ध जीवन	सुनमी.एल.विजयन	22-24
मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में कर्जदार दलित	आर्या.वी.एस.	24-27
हिन्दी कहानी-साहित्य में किन्नर विमर्श	डॉ.पीबा.एम.आर	28-32
मैत्रेयी पुष्पा के स्त्री विमर्श में ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं की जीवनचर्या का तुलनात्मक अध्ययन	विद्यादेवी	32-35
प्रवासी हिन्दी साहित्य में मानवीय संवेदना के विविध आयाम	डॉ.रीजा.आर.एस.	36-37
प्रेम भावना का दमदार दस्तावेज : नदी के द्वीप	डॉ.रॉय जोसफ	38-40
अकविता का मूल्यांकन	डॉ.षीला.टी.नायर	41-42
'अंधा युग' में विघटित मानव मूल्य	डॉ.गणेश.एम.	43-44
समकालीन हिन्दी कहानियों में बदलता समाज	डॉ.स्मिता चाक्को	45-47
बारिश : कल-आज-कल	डॉ.राजलक्ष्मी.आर.	47-50
प्रेम का पनघट (प्रेमचन्द स्मरण प्रसंग)	प्रो.हिल्डा जोसफ	50-51
सत्य कहाँ, सौन्दर्य कहाँ? (गीत) मूल : वयलार रामवर्मा	अनुवाद :श्री.के.जनार्दनन नायर	52
नतीजा गैरजिम्मेदारी का (कविता)	डॉ.बाबु.जे.	53
प्रश्नोत्तरी	जुगनू	54

मुखचित्र - राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु

STN
Dr Sheela T Nair

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

DEPARTMENT OF ... N.S.S. COLLEGE

Scanned with CamScanner

अकविता का मूल्यांकन

डॉ.शीला.टी.नायर

आज का युग व्यक्ति और समाज के बीच संघर्ष का युग है। आदर्शों के बीच होते संघर्षों ने नयी और पुरानी परम्पराओं और आधुनिकता के बीच तनाव उत्पन्न कर दिया है। आज के आधुनिक जीवन से जुड़े सांस्कृतिक राजनीतिक एवं सामाजिक आन्दोलनों की भरमार ने अकवि को अभिव्यक्ति के नये आयाम प्रदान किये हैं, साथ ही दुःख, पीड़ा, त्रास आदि पर सोचने को विवश कर दिया है। एक ओर वैज्ञानिक जीवन की अधुनातन उपलब्धियों तथा दूसरी ओर परंपरागत मूल्य, जैसे - प्रेम, सत्य, दया आदि भावों ने आज के व्यक्ति को झकझोर कर दिया है। स्वातन्त्र्योत्तर साहित्य चाहे वह कविता हो या कहानी, उपन्यास हो या नाटक इसी प्रश्न से आक्रान्त है।

हिन्दी कविता के इतिहास में सन् १९६० ई.का वर्ष अत्यधिक महत्वपूर्ण है। साठोत्तर कविता बहुत कुछ आन्दोलन का इतिहास ही है। आलोचकों ने इसे विविध नामों से पुकारा है- अकविता, नकविता, अस्वीकृत कविता, ठोस कविता, प्रतिबद्ध कविता आदि। साठोत्तर कविता नेहरू के शासनकाल के बाद की कविता है। जनता के मन में आज़ादी के बाद जो सुनहले सपने थे वे सब बाद में बेबात सिद्ध हुए। वास्तव में इसी मोहभंग के उद्गार की कविता है - साठोत्तर कविता। इन्द्रनाथ मदान के अनुसार - 'साठोत्तर कविता समूची कालांकित कविता है।' साठोत्तर कविता में अस्वीकृति, असन्तोष एवं विद्रोह का स्वर उभर कर आया है।

सन् १९६३ ई. में जगदीश चतुर्वेदी के 'प्रारंभ' के सम्पादन के साथ 'अकविता' की स्थापना का दावा किया जाने लगा, जिसे उस समय 'अभिनव काव्य' कहा गया। लेकिन १९६४ ई. में इन्द्रनाथ मदान व रमेश कुंतल मेघ के नेतृत्व में 'अभिव्यक्ति' के सम्पादन काल में इसको 'अकविता' नाम दिया गया और श्यामपरमार के १९६५ ई में 'अकविता' पत्रिका के विधिवत प्रकाशन होने पर इसका नाम अकविता स्थिर हो गया।

अकविता पर पाश्चात्य काव्य-आन्दोलन का पर्याप्त प्रभाव दिखाई देता है। कविता के आगे जो 'अ' जोड़ा गया वह कविता के निषेध का सूचक न होकर उसके अलग अस्तित्व का बोध देता है। अकविता अन्तर्विरोधों के अन्वेषण की कविता है। जीवन को एक नये अन्दाज़ से इस कविता में चित्रित किया गया है। यह युवापीढ़ी की निराशा और मोहभंग को शब्दबद्ध करनेवाली कविता है।

अकविता के बारे में आलोचकों ने भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ दी हैं –

गिरिजाकुमार माथुर के अनुसार:-

'अकविता' अस्वीकृति का नवोन्मेष है। यह समाज का तिरस्कार न करके समाज के यथार्थ का चित्रण करती है। 'अकविता' में दो प्रकार की राजनीतियों का उल्लेख है -

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE
Dr Sheela T Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
Scanned with CamScanner

एक सत्ता की, दूसरी जनता की।

श्रीलाल शुक्ल के अनुसार:-

"अकविता में स्त्रियों की सबसे बड़ी दुर्दशा हुई है।"

श्रीकांत वर्मा के अनुसार:-

"अकविता वास्तव में कुछ नहीं, चौंकाने का प्रयास मात्र।"

अकवि परिवेश के तनाव के कारण कविता करते थे। इसमें मध्यवर्ग का यथार्थ वर्णन मिलता है। इसकी मुख्य प्रवृत्ति निषेध है। अकविता के मुख्य कवि हैं - जगदीश चतुर्वेदी, श्याम परमार, कुमार विकल, गंगाप्रसाद विमल, कैलाश वाजपेयी, विनय, सौमित्र मोहन, मोना गुलाटी, परेश, मणिका मोहिनी आदि।

इस काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं -

परम्परागत तत्वों की अस्वीकृति:-

अकवि समस्त परम्परागत मूल्यों को अस्वीकार करता है। उसने धर्म, ईश्वर, नैतिकता एवं सामाजिक मूल्य जैसी धारणाओं को नकार दिया है। इसीलिए कहीं-कहीं ईश्वर की खिल्ली उड़ाई गई है तो कहीं सामाजिक पुराने मूल्यों पर व्यंग्य कसा गया है।

लोकतंत्र का विरोध:-

अकवियों ने प्रायः समस्त तन्त्रों का विरोध किया है, लेकिन उसमें लोकतन्त्र के प्रति गहरी घृणा है। कवि वेश्यालय को लोकतन्त्र से भी स्वच्छ मानते हैं।

नगर-जीवन की यंत्रणा का चित्रण:-

समाज में सभी नैतिक मूल्य गिर गये हैं। नयी पीढ़ी के मन में शहर के प्रति आकर्षण है। वह यह जानता है कि शहर में उसकी अस्मिता खोती जा रही है, फिर भी रोटी-रोज़ी पाने के लिए वहीं रहने के लिए विवश है वह शहर के भीड़ में खोता जा रहा है, इस दुख को वह भोगने के लिए अभिशप्त है। इन परिस्थितियों का वर्णन करते हुए कवि विनय कहते हैं-

"शहर में सब बनता है/लेकिन सच्चा आदमी नहीं बनता।"

व्यर्थता बोध:-

आज समाज के किसी भी स्तर पर शून्यता ही शून्यता दिखाई देती है। सम्बन्धों में शिथिलता आ गई है। किसी भी स्थिति में वह संतुष्ट नहीं है। कवि कहता है-

"निरर्थकता के इस अभिशप्त परिस्थिति में,/मैं क्यों सक्रिय बनूं/ मैं निष्क्रिय रहकर जीना चाहता हूँ।"

व्यष्टि और समष्टि का यथार्थ चित्रण:-

इसमें समाज के भ्रष्टाचार का खुलकर वर्णन किया गया है तथा इस समाज में मनुष्य को सन्देह है कि वह मनुष्य है या जानवर।

उच्छृंखल भोगवाद :-

अकविता की सबसे प्रमुख प्रवृत्ति उच्छृंखल भोगवाद या यौनवाद की अभिव्यक्ति है। इसमें समाज की सारी मर्यादाओं का अल्लंघन हुआ है। किसी प्रकार का गोपन नहीं है। जगदीश चतुर्वेदी के अनुसार "स्त्री केवल एक जिस्म है।"

मानवता के महानाश की कामना:-

कवि अपनी अतिशय भोगवाद की कल्पना के कारण अपने आप ही एक ओर आत्मघात की स्थिति में पहुँचे हैं, साथ ही वे पूरी मानवता का भी नाश देखना चाहते हैं। ये कवि निराशा के कारण मृत्यु का वरण करने को भी तैयार हो गये हैं।

अकविता बोलचाल के निकट की भाषा का प्रयोग है। भाषा में चौंकाने के तत्व भरे पड़े हैं। नये प्रतीक एवं बिम्बों का उपयोग इसमें हुआ है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि साठोत्तरी कविता में अकविता ने कथ्य एवं शिल्प के क्षेत्र में नया प्रयोग करके युगान्तर उपस्थित कर दिया है। इसने परवर्ती विचारों को भी प्रभावित किया है। अतः हिन्दी साहित्य में अकविता का एक पृथक स्थान बन पड़ा है।

असिस्टेंट प्रोफेसर
एन.एस.एस.कॉलेज,
पन्तळम, केरल।

Dr. Sheela T. Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (DIST)
KERALA - 689 501
N.S.S. COLLEGE
Scanned with CamScanner